व्यवहारवाद की मान्यताएँ
(Assumptions of Behaviouralism)

ईस्टन, रॉबर्ट ए. डहल, कैटलिन आदि विद्वानों की रचनाओं में व्यवहारवाद की मूल मान्यताओं की विस्तृत चर्चा मिलती है। इनके आधार पर व्यवहारवाद की निम्नलिखित मान्यताएँ हैं —

- अध्ययन की इकाई जितनी छोटी होगी, अध्ययन उतना ही गहन एवं वैज्ञानिक होगा।

- राजनीति विज्ञान को जब तक वैज्ञानिक अध्ययन नहीं बनाया जाएगा तब तक उसकी अवधारणाएँ और निष्कर्ष स्थायी, सुनिश्चित और सार्वदेशिक नहीं बन सकेंगे।

- ज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि से संचित एवं सुरक्षित ज्ञान की सम्बद्धता एवं सच्चाई इस पर निर्भर करेगी कि वह ज्ञान के अन्य पहलुओं से कितना सम्बन्धित है।

- अनुभवमूलक सिद्धान्त का प्रयोग आवश्यक है —

ईस्टन ने अपने एक निबन्ध 'The current meaning of Behaviouralism' में व्यवहारवाद की निम्नलिखित आठ बौद्धिक आधारशिलाओं का उल्लेख है —

1) नियमितताएँ (Regularities) - मानव के राजनीतिक व्यवहार में कुछ पहचानने योग्य एकरूपताएँ देखी जा सकती हैं, जिन्हें सामान्य कथनों में अभिव्यक्त किया जा सकता है और उनके आधार पर सामाजिक परिघटनाओं की व्याख्या एवं उनके पूर्वानुमान किए जा सकते हैं।

2) सत्यापनता (Verification) - समस्त ज्ञान संवेदन के परीक्षण पर आधारित होना चाहिए।

इसका अभिप्राय यह है कि प्रमाणिक होने के लिए ज्ञान उन मूलों से निर्मित होना चाहिए जिनका प्रयोगात्मक परीक्षण किया जा सके।

(3) तकनीकि (Techniques) – सामग्री को ग्रहण करने व उसकी व्याख्या करने, प्रमाणिक रूप से फिर विश्वास करने योग्य व तुलनात्मक सामग्री देने वाले अनुसंधान के उपकरणों व शैलियों के प्रयोग में सही तकनीकि को अपनाना चाहिए।

(4) परिमाणीकरण (Quantification) – जहाँ कहीं भी तथ्यों को स्पष्ट करने की आवश्यकता हो, वहाँ आंकड़ों के संग्रह, शोध के परिणामों और कथनों की अभिव्यक्ति के लिए मापन तथा परिमाणीकरण को अपनाया जाना चाहिए।

(5) मूल्य निरपेक्षता (Value free) – मूल्य निरपेक्षता व्यवहारवाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। अतः व्यवहारवादी मूल्यों से तटस्थ रहना चाहते हैं। उनका कहना है कि मूल्यों को वैज्ञानिक विश्लेषण वहीं तक स्थान दिया जाना चाहिए, जहाँ तक वह राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करता हो। वे अध्ययन नैतिक मूल्यों को कोई स्थान नहीं देते।

(6) क्रमबद्धीकरण (Systematization) – शोध का क्रमबद्धीकरण होना चाहिए। इस संदर्भ में क्रमबद्ध का अर्थ है कि अनुसंधान का आधार तथा उसका लक्ष्य सिद्धान्त होना चाहिए। सिद्धान्त को तथ्य से अलग नहीं किया जा सकता है तथा तथ्यों के विश्लेषण में सिद्धान्तों की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। इन सिद्धान्तों को केवल

कर

कर वे प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति सामान्य सिद्धांतों की खोज करते हैं।

(7) विशुद्ध विज्ञान (Pure Science) - व्यवहारवादी मूलतः विशुद्ध विज्ञान के दृष्टिकोण को अपनाते हैं। वे इस बात से सहमत हैं कि सिद्धान्त और उसका प्रयोग दोनों वैज्ञानिक पद्धति के अंग हैं। सैद्धांतिक ज्ञान की प्राप्ति का स्वभाव तथा उसका अगला कदम जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए उसका उपयोग करना है। अतः वे विशुद्ध शोध को अधिक महत्व देते हैं।

(8) एकीकरण (Integration) - व्यवहारवादियों की अध्ययन शैली अन्तः विषयक है। इसलिए वे राजनीति को एक पृथक अथवा ज्ञान की विशिष्ट शाखा नहीं मानते हैं। उनके विचार में राजनीति विज्ञान सामाजिक विज्ञानों में से एक है और इसी कारण इसे समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र जैसे ~~प्राकृतिक~~ विज्ञानों अन्य सामाजिक विज्ञानों, यहाँ तक कि जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञानों जैसे प्राकृतिक विज्ञानों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए, ~~क्योंकि~~ क्योंकि यह अविभाज्य हैं।

उपर्युक्त विवरण में व्यवहारवादी दृष्टिकोण के सभी प्रमुख आधार आ गए हैं। इनके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यवहारवादी ~~समुच्च~~ राजनीति विज्ञान को राजनीति को विज्ञान की स्थिति प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील हैं। उनका उद्देश्य राजनीति विज्ञान में विज्ञान की परिशुद्ध प्रविधियों के प्रयोग को अपनाना है इसमें स्पष्टतः यह राजनीति विज्ञान की शोध प्रणाली में क्रांति का सूचक है। इसने राजनीति विज्ञान को एक नई मूल्य दे जाया, नई पद्धतियाँ एवं नई

कर

कर वे प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति सामान्य सिद्धांतों की खोज करते हैं।

(7) विशुद्ध विज्ञान (Pure Science) - व्यवहारवादी मूलतः विशुद्ध विज्ञान के दृष्टिकोण को अपनाते हैं। वे इस बात से सहमत हैं कि सिद्धांत और उसका प्रयोग दोनों वैज्ञानिक पद्धति के अंग हैं। सैद्धांतिक ज्ञान की प्राप्ति का स्वभाव तथा उसका अगला कदम जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए उसका उपयोग करना है। अतः वे विशुद्ध शोध को अधिक महत्व देते हैं।

8) एकीकरण (Integration) - व्यवहारवादियों की अध्ययन शैली अन्तः विषयक है। इसलिए वे राजनीति को एक पृथक अथवा ज्ञान की विशिष्ट शाखा नहीं मानते हैं। उनके विचार में राजनीति विज्ञान सामाजिक विज्ञानों में से एक है और इसी कारण इसे समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र जैसे ~~प्राकृतिक~~ विज्ञानों अन्य सामाजिक विज्ञानों, यहाँ तक की जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञानों जैसे प्राकृतिक विज्ञानों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए, ~~क्योंकि~~ क्योंकि यह अविभाज्य है।

उपर्युक्त विवरण में व्यवहारवादी दृष्टिकोण के सभी प्रमुख आधार आ गए हैं। इनके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यवहारवादी ~~समुच्च~~ राजनीति विज्ञान को राजनीति को विज्ञान की स्थिति प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील हैं। उनका उद्देश्य राजनीति विज्ञान में विज्ञान की परिशुद्ध प्रविधियों के प्रयोग को अपनाना है इसमें स्पष्टतः यह राजनीति विज्ञान की शोध प्रणाली में क्रांति का सूचक है। इससे राजनीति विज्ञान को एक नई मूल्य दिया गया। नई पद्धतियाँ एवं नई ...

अपर

कर वे प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति सामान्य सिद्धान्तों की खोज करते हैं।

(7) विशुद्ध विज्ञान (Pure Science) - व्यवहारवादी मूलतः 'विशुद्ध विज्ञान' के दृष्टिकोण को अपनाते हैं। वे इस बात से सहमत हैं कि सिद्धान्त और उसका प्रयोग दोनों वैज्ञानिक पद्धति के अंग हैं। सैद्धान्तिक ज्ञान की प्राप्ति का स्वभाव तथा उसका अगला कदम जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए उसका उपयोग करना है। अतः वे विशुद्ध शोध को अधिक महत्व देते हैं।

(8) एकीकरण (Integration) - व्यवहारवादियों की अध्ययन शैली अन्तः विषयक है। इसलिए वे राजनीति को एक पृथक अथवा ज्ञान की विशिष्ट शाखा नहीं मानते हैं। उनके विचार में राजनीति विज्ञान सामाजिक विज्ञानों में से एक है और इसी कारण इसे समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र जैसे ~~प्राकृतिक~~ विज्ञानों अन्य सामाजिक विज्ञानों, यहाँ तक कि जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञानों जैसे प्राकृतिक विज्ञानों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए, ~~क्योंकि~~ क्योंकि यह अविभाज्य है।

उपर्युक्त विवरण में व्यवहारवादी दृष्टिकोण के सभी प्रमुख आधार आ गए हैं। इनके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यवहारवादी ~~सम्मुख~~ राजनीति विज्ञान को राजनीति का विज्ञान की स्थिति प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील है। उनका उद्देश्य राजनीति विज्ञान में विज्ञान की परिशुद्ध प्रविधियों के प्रयोग को अपनाना है। ~~इसने~~ स्पष्टतः यह राजनीति विज्ञान की शोध प्रणाली में ऐसे क्रान्ति का सूचक है। इसने राजनीति विज्ञान को एक नई मूल्य, नई भाषा, नई पद्धतियाँ एवं नई दशाएँ प्रदान की है।